International Journal of Social Nexus Review
Volume 1 | Issue 1 | July 2026
Available online at: https://socialnexusreview.com/

शिक्षा एवं नवाचार के माध्यम से विकसित भारत @2047: लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ

डॉ० संजय कुमार स्वर्णकार[1], डॉ० सुषमा वर्मा[2]

[1]असिस्टेंट प्रोफेसर, बी० एड० विभाग, उदय प्रताप कॉलेज, वाराणसी

[2]सहायक अध्यापिका, उच्च प्राथमिक विद्यालय मंचितपुर, अमावा रायबरेली।

[1]**Email:** drsanjay0082@gmail.com

Received: 14 June 2026 | **Accepted:** 15 July 2026 | **Published:** 25 July 2026

सार (Abstract)

विकसित भारत@2047' का लक्ष्य भारत को 2047 तक एक सशक्त, समृद्ध और समावेशी राष्ट्र के रूप में स्थापित करना है। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा, संस्कृति और नवाचार के बीच समन्वय आवश्यक है। यह शोधपत्र शिक्षा, संस्कृति और तकनीकी नवाचार के परस्पर संबंधों का विश्लेषण करता है, विशेष रूप से लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन के दृष्टिकोण से। अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि 'डिजिटल इंडिया', 'स्टार्टअप इंडिया', 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', और 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020' जैसी पहलें न केवल आर्थिक विकास को गति दे रही हैं, बल्कि समाज के वंचित समूहों- विशेषतः महिलाओं, दिव्यांगों और अल्पसंख्यकों- को सशक्त बना रही हैं। शोधपत्र में संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) के साथ भारत की नीतियों का भी परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत किया गया है। निष्कर्ष रूप में पाया गया कि 'विकसित भारत@2047' का वास्तविक अर्थ तभी साकार होगा जब शिक्षा प्रणाली, सांस्कृतिक चेतना और तकनीकी नवाचार के माध्यम से लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन सुनिश्चित किए जाएँ।

मुख्य शब्द: विकसित भारत@2047, नवाचार, लैंगिक समानता, सामाजिक समावेशन, डिजिटल इंडिया, सतत विकास लक्ष्य

प्रस्तावना

भारत वर्ष आज एक ऐसे ऐतिहासिक मोड़ पर खड़ा है, जहाँ वह स्वतंत्रता के सौवें वर्ष-'भारत@2047' की ओर अग्रसर है। यह केवल एक कालखण्डीय लक्ष्य नहीं, बल्कि एक दृष्टि-दर्शन है, जो एक सशक्त, समृद्ध, समावेशी और आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना को मूर्त रूप देने का संकल्प प्रस्तुत करता है। 'विकसित भारत@2047' का अभिप्राय केवल आर्थिक प्रगति से नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, संस्कृति, नवाचार, विज्ञान, सामाजिक न्याय, और लैंगिक समानता जैसे सभी मानवीय क्षेत्रों में संतुलित विकास का प्रतीक है।

विकसित भारत@2047 की संकल्पना

विकसित भारत की संकल्पना प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा एक समग्र राष्ट्रीय अभियान के रूप में प्रस्तुत की गई है, जिसका उद्देश्य है- भारत को 2047 तक विश्व की अग्रणी विकसित अर्थव्यवस्थाओं में शामिल करना। यह परिकल्पना इस विचार पर आधारित है कि जब देश का प्रत्येक नागरिक, समुदाय और संस्था अपने स्तर पर नवाचार, रचनात्मकता और समर्पण के साथ योगदान देगा, तभी एक समावेशी और टिकाऊ विकास मॉडल को साकार किया जा सकेगा।

इस दृष्टिकोण में भारत को केवल आर्थिक दृष्टि से विकसित करना ही नहीं, बल्कि उसे मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, और सामाजिक समानता के साथ विकसित करना प्रमुख उद्देश्य है। विकसित भारत@2047 की यह परिकल्पना एक ऐसी सभ्यता

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJSNR Published by Shri Ram Niyamat Charitable Trust.

के पुनरुत्थान की ओर इंगित करती है जो आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन स्थापित कर सके। नीति आयोग द्वारा तैयार किए जा रहे 'भारत@2047: विज़न डॉक्युमेंट' के अनुसार, विकास का यह अभियान चार प्रमुख स्तंभों पर आधारित है-

1. आर्थिक सशक्तिकरण
2. सामाजिक न्याय और समानता
3. संस्कृति और मूल्य आधारित विकास
4. नवाचार और प्रौद्योगिकी-आधारित परिवर्तन

इस विज़न का मूल आधार है- 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास', जो यह दर्शाता है कि भारत का विकास तब ही संभव है जब समाज का प्रत्येक वर्ग चाहे वह लैंगिक, सामाजिक, आर्थिक या सांस्कृतिक रूप से वंचित हो, मुख्यधारा में सक्रिय रूप से शामिल हो।

भारत के विकास की परिकल्पना केवल औद्योगिकीकरण या शहरीकरण पर आधारित नहीं है। शिक्षा, संस्कृति और नवाचार- ये तीनों स्तंभ इस विज़न की आत्मा हैं। शिक्षा व्यक्ति और समाज के बीच ज्ञान, मूल्य और दृष्टिकोण का सेतु है। संस्कृति भारत की आत्मा है, जो विविधता में एकता के सिद्धांत पर आधारित है। नवाचार वह शक्ति है जो परंपरा और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य करती है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, और मेक इन इंडिया जैसी योजनाएँ इसी नवाचार दृष्टि की उपज हैं। 'विकसित भारत@2047' की वास्तविक सफलता तभी संभव होगी जब विकास प्रक्रिया में लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन को केंद्र में रखा जाएगा। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य-5 में भी कहा गया है कि लैंगिक समानता केवल एक अधिकार नहीं, बल्कि विकास की पूर्वशर्त है।

भारत में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'महिला सशक्तिकरण मिशन', 'नारी शक्ति पुरस्कार' जैसी योजनाएँ इसी दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। शिक्षा के माध्यम से महिलाओं और वंचित समुदायों को सशक्त बनाना ही वास्तविक समावेशी विकास का आधार है। 'विकसित भारत@2047' का विज़न केवल सरकार की नीति नहीं, बल्कि एक राष्ट्रीय आंदोलन है, जो नागरिक चेतना, सामाजिक सहभागिता, और नवाचार की संस्कृति पर आधारित है। इस विज़न की सफलता तभी संभव है जब शिक्षा नीति में संस्कृति और नवाचार का समन्वय हो, और यह समन्वय समाज के प्रत्येक वर्ग, विशेषतः महिलाओं और वंचित समूहों तक समान रूप से पहुँचे।

नई शिक्षा नीति 2020 के अंतर्गत समानता और समावेशन

भारत में शिक्षा को सदैव सामाजिक परिवर्तन और मानव विकास का सर्वाधिक सशक्त माध्यम माना गया है। शिक्षा न केवल ज्ञान का संवाहक है, बल्कि यह समाज में समान अवसर, सामाजिक न्याय, और लैंगिक संतुलन स्थापित करने का प्रमुख साधन भी है। इस दृष्टि से नई शिक्षा नीति 2020 भारत के शिक्षा इतिहास में एक युगांतकारी दस्तावेज़ है, जो 'विकसित भारत@2047' की परिकल्पना को साकार करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

नई शिक्षा नीति 2020 का मूल उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समग्र शिक्षा पर बल देता है अर्थात ऐसी शिक्षा जो व्यक्ति के बौद्धिक, सामाजिक, भावनात्मक, सांस्कृतिक और नैतिक विकास को सुनिश्चित करे। इस नीति में यह स्पष्ट किया गया है कि शिक्षा का लक्ष्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में सक्रिय योगदान करने वाले उत्तरदायी नागरिक तैयार करना है। नई शिक्षा नीति के अनुसार भारत का प्रत्येक नागरिक, चाहे उसकी लिंग, जाति, भाषा, धर्म, आर्थिक स्थिति या भौगोलिक स्थिति कुछ भी हो, समान शिक्षा का अधिकार रखता है। लैंगिक समानता नई शिक्षा नीति 2020 के केंद्र में स्थित है। इसमें शिक्षा को महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी साधन माना गया है।

इस दिशा में निम्नलिखित कदम महत्वपूर्ण हैं-

I. महिला शिक्षकों की संख्या बढ़ाने पर बल, ताकि ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में बालिकाएँ सुरक्षित और प्रेरक वातावरण में सीख सकें।
II. STEM शिक्षा में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने हेतु विशेष कार्यक्रम।

III. लैंगिक संवेदनशील पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, ताकि विद्यार्थियों में समानता, सहिष्णुता और सम्मान के मूल्य विकसित हों।

भारत की सामाजिक संरचना में विविधता और असमानता दोनों विद्यमान हैं। नई शिक्षा नीति 2020 इन असमानताओं को पाटने का प्रयास करती है। नीति में कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता नहीं, बल्कि समावेशिता है।

मुख्य नीतिगत पहलें इस प्रकार हैं-

1. मातृभाषा में प्रारंभिक शिक्षा देने से वंचित समूहों की सहभागिता बढ़ेगी।
2. दूरस्थ और ऑनलाइन शिक्षा प्लेटफॉर्म जैसे स्वयं (SWAYAM), दीक्षा (DIKSHA), ई-पाठशाला (e-Pathshala) के माध्यम से शिक्षा को सुलभ बनाना।
3. विकलांग विद्यार्थियों के लिए डिजिटल उपकरण, ब्रेल, सांकेतिक भाषाओं और सहायक तकनीकों का विकास।
4. स्थानीय और जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराओं को शिक्षण प्रक्रिया का अंग बनाना।

नई शिक्षा नीति 2020 ने नवाचार को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाया है। इसके अनुसार शिक्षा प्रणाली को इस प्रकार रूपांतरित करना आवश्यक है कि विद्यार्थी रचनात्मक समस्या समाधान, आलोचनात्मक चिंतन, और तकनीकी दक्षता में पारंगत हो सकें।

I. राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (National Research Foundation) की स्थापना के माध्यम से नवाचार आधारित शिक्षा को प्रोत्साहन।
II. स्कूल कॉम्प्लेक्स और क्लस्टर सिस्टम द्वारा संसाधनों का साझा उपयोग, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में भी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित की जा सके।
III. एआई, रोबोटिक्स, कोडिंगऔर डिजिटल लिटरेसी को पाठ्यक्रम में सम्मिलित कर आधुनिक कौशल आधारित शिक्षा को सशक्त बनाना।

महिलाओं को शिक्षा से जोड़ना केवल व्यक्तिगत उत्थान नहीं, बल्कि सामाजिक विकास का गुणक प्रभाव उत्पन्न करता है। यूनेस्को की रिपोर्ट (2023) के अनुसार, यदि सभी महिलाओं को माध्यमिक शिक्षा तक पहुँच मिले, तो बाल विवाह में 64% तक कमी और मातृ मृत्यु दर में 49% तक कमी लाई जा सकती है। भारत की 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ', 'सक्षम बालिका योजना', और 'नारी शक्ति पुरस्कार' जैसी पहलें शिक्षा को सामाजिक न्याय और समानता के साथ जोड़ती हैं। 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने की दिशा में शिक्षा का योगदान बहुआयामी है। शिक्षा को यदि समावेशी, मूल्यनिष्ठ और नवाचारी बनाया जाए, तो 'विकसित भारत@2047' की अवधारणा केवल नारा नहीं, बल्कि वास्तविकता बन सकती है।

भारतीय संस्कृति के समावेशी दृष्टिकोण में लैंगिक समानता का स्थान

भारत की पहचान उसकी संस्कृति, परंपरा और मूल्य-व्यवस्था में निहित है। भारतीय संस्कृति विश्व की प्राचीनतम और सर्वाधिक समावेशी संस्कृतियों में से एक है, जिसने सदैव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् संपूर्ण विश्व एक परिवार है, के आदर्श को अपनाया है। यह दृष्टिकोण केवल आध्यात्मिक या नैतिक नहीं, बल्कि गहन सामाजिक और शैक्षिक महत्त्व रखता है। 'विकसित भारत@2047' की दिशा में जब हम शिक्षा और नवाचार की बात करते हैं, तो यह आवश्यक है कि हमारे विकास मॉडल का सांस्कृतिक आधार समानता, सह-अस्तित्व और समावेशिता पर टिका हो।

भारतीय संस्कृति ने सदैव समरसता और संतुलन पर बल दिया है। यहाँ समानता और सम्मान के सिद्धांत वेदों, उपनिषदों, महाकाव्यों और बौद्ध-जैन परंपराओं में गहराई से अंतर्निहित हैं। उदाहरण के लिए- ऋग्वेद में कहा गया है- 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:' अर्थात् जहाँ नारी का सम्मान होता है, वहीं देवता निवास करते हैं। उपनिषदों में ज्ञान को सार्वभौमिक अधिकार माना गया- 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' की भावना केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक समानता का उद्घोष है। भारतीय दृष्टिकोण में संस्कृति

और शिक्षा एक-दूसरे से अविभाज्य हैं। संस्कृति व्यक्ति के व्यवहार, दृष्टिकोण और मूल्यों का निर्माण करती है। शिक्षा इन मूल्यों को समाज में प्रसारित करने का माध्यम बनती है।

विकसित भारत@2047 की दिशा में शिक्षा का उद्देश्य केवल आर्थिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक रूप से परिपक्व नागरिकों का निर्माण होना चाहिए। भारतीय संस्कृति में नारी को सृजन, संवेदना और शक्ति का प्रतीक माना गया है किन्तु सामाजिक विकास के इतिहास में, समय के साथ पितृसत्तात्मक संरचनाओं ने इस संतुलन को चुनौती दी। अब आवश्यकता है कि हम शिक्षा के माध्यम से उस मूल सांस्कृतिक संतुलन को पुनः स्थापित करें- जहाँ नारी केवल 'संरक्षण' की नहीं, बल्कि 'सहभागिता' की पात्र बने।

संस्कृति-आधारित शिक्षा का अर्थ यह नहीं कि शिक्षा को पारंपरिकता में बाँध दिया जाए, बल्कि यह है कि भारतीय मूल्यों को आधुनिक शिक्षण प्रणाली में एकीकृत किया जाए। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को 'वैश्विक सोच के साथ स्थानीय संवेदनशीलता' का पाठ सिखाता है।

लैंगिक समानता केवल संवैधानिक अधिकार नहीं, बल्कि सांस्कृतिक चेतना का भी प्रश्न है। भारत में नारी की भूमिका सदैव बहुआयामी रही है। विदुषी, गार्गी, मैत्रेयी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, और सावित्रीबाई फुले जैसी महिलाएँ ज्ञान, नेतृत्व और परिवर्तन की प्रतीक रही हैं। आज की शिक्षा प्रणाली को इस सांस्कृतिक धरोहर से प्रेरणा लेकर नारी को सशक्त, नवाचारी और आत्मनिर्भर नागरिक के रूप में तैयार करना चाहिए। यह तभी संभव है जब शिक्षा प्रणाली लैंगिक संवेदनशील हो और संस्कृति में समानता को मूल्य के रूप में स्थापित करे। इसी प्रकार, सांस्कृतिक चेतना आधुनिक नवाचारों के साथ मिलकर एक संतुलित और समावेशी समाज के निर्माण में योगदान देती है।

21वीं सदी का भारत तेजी से ज्ञान आधारित समाज की दिशा में अग्रसर है। इस परिवर्तन का सबसे प्रमुख साधन है- नवाचार और तकनीकी सशक्तिकरण। 'विकसित भारत@2047' के विज़न में नवाचार को राष्ट्र निर्माण का केंद्रबिंदु माना गया है, क्योंकि नवाचार ही वह शक्ति है जो आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक विकास को गति प्रदान करती है। डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और महिला सशक्तिकरण के कार्यक्रम इस परिवर्तन के तीन सशक्त स्तंभ हैं, जो शिक्षा, संस्कृति और समानता के समन्वय से "नए भारत" की रूपरेखा निर्मित कर रहे हैं।

नीति आयोग के अटल इनोवेशन मिशन, डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया और मेक इन इंडिया जैसे अभियानों का उद्देश्य देश के युवाओं, महिलाओं और अनुसंधान संस्थानों को नवाचार की मुख्यधारा में लाना है। डिजिटल इंडिया ने शिक्षा, रोजगार और शासन में पारदर्शिता और भागीदारी को बढ़ाया है। ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएँ अब डिजिटल तकनीक का उपयोग करके ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा और स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं।

स्टार्टअप इंडिया अभियान (2016) ने भारत को नवाचार के वैश्विक केंद्र के रूप में स्थापित करने की दिशा में क्रांतिकारी परिवर्तन किए हैं। इस पहल का उद्देश्य युवाओं में उद्यमिता और रचनात्मक सोच को प्रोत्साहन देना है। अटल इनक्यूबेशन सेंटर और टी-हब जैसे केंद्र, जो नवोद्यमियों को प्रशिक्षण और संसाधन प्रदान करते हैं। भारत अब विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप हब है, और इसमें लगभग 15% स्टार्टअप्स महिलाओं द्वारा संचालित हैं। यह परिवर्तन न केवल आर्थिक, बल्कि सामाजिक रूप से भी महत्वपूर्ण है क्योंकि यह महिलाओं को निर्णयकर्ता और नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित कर रहा है। नवाचार और प्रौद्योगिकी ने महिलाओं की स्थिति को बदलने में अभूतपूर्व योगदान दिया है। यूनेस्को (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, डिजिटल साक्षरता में महिलाओं की भागीदारी में 38% की वृद्धि दर्ज की गई है। यह दर्शाता है कि नवाचार और तकनीक अब लैंगिक समानता के प्रमुख उपकरण बन चुके हैं। संस्कृति और नवाचार के बीच सामंजस्य स्थापित करना 'विकसित भारत@2047' की एक प्रमुख शर्त है। भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ यथा योग, आयुर्वेद, वास्तु, संगीत, लोककला इत्यादि आज वैश्विक नवाचार के स्रोत बन चुकी हैं।

प्रौद्योगिकी ने समाज के हाशिए पर स्थित समूहों तक पहुँच बनाकर सामाजिक लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को तेज किया है। ग्रामीण महिलाएँ अब मोबाइल बैंकिंग, डिजिटल शिक्षा और ई-गवर्नेंस सेवाओं की सक्रिय उपभोक्ता हैं। दिव्यांगजनों के लिए सहायक तकनीकों ने शिक्षा और रोजगार में नई संभावनाएँ खोली हैं। यह दर्शाता है कि नवाचार और समावेशन एक-दूसरे के पूरक हैं, न कि विरोधी।

लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन की दिशा में राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पहलें

'विकसित भारत@2047' की दृष्टि केवल आर्थिक उन्नति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक ऐसे न्यायसंगत, समावेशी और समान अवसरों वाले समाज की परिकल्पना करती है जिसमें लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन उसके केन्द्रीय मूल्य हों। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) और भारत सरकार की विभिन्न योजनाओं ने इस दिशा में ठोस आधार तैयार किया है।

1. अंतर्राष्ट्रीय पहल- संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्य (SDGs)- संयुक्त राष्ट्र महासभा (2015) द्वारा स्वीकृत सतत विकास लक्ष्य (SDGs), वैश्विक स्तर पर 2030 तक एक समावेशी और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं।

इनमें से कुछ प्रमुख लक्ष्य सीधे-सीधे लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन से संबंधित हैं—

SDG 4: **गुणवत्तापूर्ण शिक्षा-** सभी के लिए समान और समावेशी शिक्षा का अधिकार सुनिश्चित करना तथा शिक्षा के माध्यम से महिलाओं, बालिकाओं, दिव्यांग और अल्पसंख्यकों का सशक्तिकरण।

SDG 5: **लैंगिक समानता-** महिलाओं और बालिकाओं के खिलाफ सभी प्रकार के भेदभाव, हिंसा और असमानता को समाप्त करना तथा नेतृत्व और निर्णय लेने में महिलाओं की समान भागीदारी सुनिश्चित करना।

SDG 10: **असमानताओं में कमी-** सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं को समाप्त करने पर बल।

SDG 16: शांति, सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के संरक्षण को बढ़ावा देना।

इन लक्ष्यों का मूल उद्देश्य यह है कि विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से पहुँचें और कोई भी व्यक्ति विकास यात्रा में पीछे न रह जाए।

2. राष्ट्रीय पहल- भारत सरकार ने "विकसित भारत@2047" के परिप्रेक्ष्य में कई ऐसी नीतियाँ और योजनाएँ लागू की हैं जिनका प्रमुख उद्देश्य शिक्षा, रोजगार, तकनीक और सामाजिक अवसरों में समान भागीदारी सुनिश्चित करना है।

I. शिक्षा को समान, न्यायपूर्ण और बहुविषयक बनाने का संकल्प।
II. प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) के माध्यम से लड़कियों की प्रारंभिक शिक्षा को बढ़ावा।
III. समग्र शिक्षा अभियान
IV. दिव्यांग बच्चों, अनुसूचित जाति एवं जनजाति तथा अल्पसंख्यक समुदायों के लिए विशेष शिक्षण कार्यक्रम।
V. स्कूलों में बालिकाओं के लिए अलग शौचालय, छात्रवृत्ति योजनाएँ, और बालिकाओं के लिए सुरक्षा उपाय।
VI. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' (2015)- बालिकाओं की शिक्षा, सुरक्षा और सम्मान के लिए राष्ट्रीय अभियान।
VII. 'महिला शक्ति केंद्र योजना'- ग्रामीण महिलाओं को सामाजिक और आर्थिक रूप से सशक्त बनाना।
VIII. 'स्टैंड-अप इंडिया योजना'- महिला उद्यमियों को ऋण और संसाधन उपलब्ध कराना।
IX. 'प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना'- महिलाओं के स्वास्थ्य और जीवनस्तर में सुधार।
X. 'महिला ई-हाट' और 'महिला उद्यमिता मंच (WEP)'- डिजिटल प्लेटफार्म के माध्यम से महिला उद्यमिता को प्रोत्साहन।
XI. राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (NSAP) — गरीब, वृद्ध, विधवा और दिव्यांग व्यक्तियों के लिए सहायता।
XII. प्रधानमंत्री आदर्श ग्राम योजना — अनुसूचित जाति/जनजाति बहुल ग्रामों में समग्र विकास।
XIII. राष्ट्रीय पिछड़ा वर्ग वित्त एवं विकास निगम (NBCFDC) — वंचित समूहों के आर्थिक सशक्तिकरण हेतु ऋण एवं प्रशिक्षण।
XIV. 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना — सांस्कृतिक एकता और विविधता में समरसता को बढ़ावा देती है।
XV. राष्ट्रीय नवाचार अभियान— ग्रामीण, जनजातीय और महिला नवोन्मेषकों को तकनीकी सहायता।
XVI. 'इंडिया समावेशन फाउंडेशन' — सामाजिक उद्यमिता के माध्यम से सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है।

चुनौतियाँ

हालांकि नीतिगत स्तर पर उल्लेखनीय प्रगति हुई है, फिर भी अनेक चुनौतियाँ बनी हुई हैं:

I. ग्रामीण क्षेत्रों में डिजिटल साक्षरता की कमी।
II. STEM क्षेत्रों में महिलाओं की सीमित भागीदारी।
III. सामाजिक पूर्वाग्रह और पितृसत्तात्मक दृष्टिकोण।
IV. दिव्यांग और हाशिए पर स्थित समूहों के लिए सीमित पहुँच।

संभावित समाधान

I. डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों का विस्तार।
II. लैंगिक संवेदनशील पाठ्यक्रम और प्रशिक्षण।
III. शिक्षा में AI और डेटा एनालिटिक्स का उपयोग कर वंचित समूहों की सीखने की जरूरतों की पहचान।
IV. महिला नेतृत्व को नीति-निर्माण में संस्थागत रूप से शामिल करना।

निष्कर्ष (Conclusion)

'विकसित भारत@2047' की अवधारणा केवल आर्थिक समृद्धि का नहीं, बल्कि समावेशी और सांस्कृतिक रूप से जागरूक भारत का स्वप्न है। इस लक्ष्य की प्राप्ति तभी संभव है जब शिक्षा, संस्कृति और नवाचार के बीच वास्तविक समन्वय स्थापित हो तथा प्रत्येक नीति-स्तर पर लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन को प्राथमिकता दी जाए। शिक्षा से चेतना, संस्कृति से मूल्य, और नवाचार से परिवर्तन उत्पन्न होता है। यदि ये तीनों मिलकर कार्य करें तो भारत 2047 तक न केवल विकसित, बल्कि न्यायपूर्ण, समावेशी और मानवीय मूल्य-सम्पन्न राष्ट्र बन सकता है तभी भारत का विकास 'सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास' के वास्तविक अर्थ में सफल होगा।

संदर्भ सूची

[1]. अटल नवाचार मिशन (2022). भारत में नवाचार और उद्यमिता को प्रोत्साहन. नीति आयोग।
[2]. इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (2021). डिजिटल इंडिया: शासन में रूपांतरण. भारत सरकार।
[3]. कौशल विकास और उद्यमिता मंत्रालय (2022)। महिला उद्यमिता प्लेटफॉर्म (WEP) प्रगति रिपोर्ट. भारत सरकार।
[4]. चतुर्वेदी, आर. (2020). शिक्षा में नवाचार और समावेशन. जयपुर: राजस्थानी ग्रंथ अकादमी।
[5]. जोशी, एस. (2021). भारतीय संस्कृति और मूल्य शिक्षा. वाराणसी: भारती प्रकाशन।
[6]. नीति आयोग (2021). भारत@2047: विजन दस्तावेज़. नई दिल्ली: भारत सरकार।
[7]. नीति आयोग (2021). इंडिया इनोवेशन इंडेक्स 2021. भारत सरकार।
[8]. पांडेय, एस. (2023). लैंगिक समानता और शिक्षा. नई दिल्ली: राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)।
[9]. प्रेस सूचना ब्यूरो (2023). विकसित भारत@2047 दृष्टि दस्तावेज़. भारत सरकार।
[10]. भारत सरकार (2020). नई शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
[11]. भारत सरकार (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. मानव संसाधन विकास मंत्रालय।
[12]. महिला एवं बाल विकास मंत्रालय (2022). वार्षिक रिपोर्ट 2021–22। भारत सरकार।
[13]. मिश्रा, वी. (2022). शिक्षा और सामाजिक परिवर्तन. नई दिल्ली: अटल प्रकाशन।
[14]. मेहता, एस. एवं रानी, के. (2022). ग्रामीण भारत में डिजिटल साक्षरता और महिला सशक्तिकरण. जर्नल ऑफ एजुकेशन एंड डेवलपमेंट स्टडीज, 10(4), 56–68।

[15]. यूनेस्को। (2023) शिक्षा और लैंगिक समानता रिपोर्ट. पेरिस: संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन।

[16]. राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान (नीपा) (2023)। भारत में समावेशी शिक्षा: नीतियाँ और व्यवहार. नई दिल्ली: नीपा।

[17]. विश्व आर्थिक मंच (2023). वैश्विक लैंगिक अंतर रिपोर्ट 2023. जेनेवा: डब्ल्यू.ई.एफ.

[18]. शर्मा, पी. (2022). शिक्षा, समाज और समावेशी विकास: नए भारत की दिशाएं. नई दिल्ली: नेशनल बुक ट्रस्ट।

[19]. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (UNDP). (2015). सतत विकास लक्ष्य.संयुक्त राष्ट्र।

[20]. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) (2023). सतत विकास लक्ष्य रिपोर्ट 2023. संयुक्त राष्ट्र।

[21]. संयुक्त राष्ट्र (2015). हमारी दुनिया का रूपांतरण: सतत विकास हेतु 2030 एजेंडा. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र।

[22]. सिंह, आर. (2021). भारतीय संस्कृति और नारी शक्ति: एक अध्ययन. वाराणसी: भारतीय विद्या संस्थान।

[23]. सिंह, एस.के. (2024). विकसित भारत की दिशा में शिक्षा, संस्कृति और नवाचार का समन्वय. लखनऊ: भारतीय विद्या संस्थान।

Cite this Article:

संजय कुमार स्वर्णकार, सुषमा वर्मा (2026). शिक्षा एवं नवाचार के माध्यम से विकसित भारत @2047: लैंगिक समानता और सामाजिक समावेशन की संभावनाएँ एवं चुनौतियाँ, International Journal of Social Nexus Review. 1(1), 10–16.

Journal URL: *https://socialnexusreview.com/*

Disclaimer/Publisher's Note*: The views, findings, and conclusions presented in this article are entirely the responsibility of the author(s). The publisher and editorial team are not responsible for any inaccuracies, copyright infringements, or any consequences resulting from the use or interpretation of the published content.*